श्री गुरू ग्रंथ साहिब में भक्तों का संगीत प्रयोग

डॉ. विजय कुमार
संगीत विभाग, गुरू नानक नैशनल कॉलेज, नकोदर जिला जालन्धर, पंजाब

श्री शाङ्र्गदेव, संगीत–रत्नाकर में कहते हैं कि संगीत धर्म, अर्थ, काम और मुक्ति––चारों का साधन है।1 इस प्रकार साधन की रुचि के अनुसार संगीत विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्ति कराने में समर्थ हैं। लक्ष्यों की विभिन्नता, साधकों के दृष्टिकोण के भेद को अभिव्यक्त करती है। मुक्ति चाहने वाला साधक, संगीत की साधना द्वारा, चित्त एकाग्रता प्राप्त करते हुए ब्रहम में लीन होने का प्रयास करेगा। एक कामी व्यक्ति संगीत द्वारा अपनी प्रेयसी की वासनाएं जागृत करने में मस्त होगा। इसी तरह धन को चाहने वाला निश्चय ही अधिक से अधिक धन–लाभ करने के लिए संगीत को साधन बनायेगा।

गुरू ग्रन्थ साहिब के समस्त भक्त–भक्त त्रिलोचन, भक्त नामदेव, भक्त कबीर, भक्त रविदास– मोक्ष को प्राप्त करने के लिए, संगीत–साधना द्वारा चित्त की एकाग्रता प्राप्त करते हुए परमात्मा में लीन होने को प्रयास करते हैं। भक्त–कवियों के काव्य का आधार संगीत रहा है। इसके बारे में डा0 पुष्पा जौहरी लिखती हैं–मध्यकालीन सन्त काव्य–धारा ने संगीतमय गेय पदावली को ही अपनी आत्मभिव्यक्ति का माध्यम बना कर, संगीत और काव्य का संयोग किया था। बात यह है कि सत्–रूपी परमतत्व को अनुभूति से प्राप्त परमानन्द तथा निःस्वार्थ भाव से विश्व–कल्याण में प्रवृत्त लोक–साक्षात्कार ही सन्तों के जीवन का प्रयोजन होता है। इन दोनों प्रयोजना का वाहक होने के कारण संगीत सहज ही संतो के काव्य का प्रबल आधार बन गया है। 2

गुरू ग्रन्थ साहिब में प्राप्त प्रमुख भक्तों के लिए संगीत उनकी परमात्मा–भक्ति का साधन मात्र है। उन्होंने अपने इष्ठ की भक्ति के लिए गायन किया है। वे अपने शब्द अर्थात् पद के लिए संगीत से भावानुकूल ध्वनिपरक वातावरण प्राप्त करके सन्तुष्ट हो सकते हैं। सन्तों द्वारा काव्य में संगीत–प्रयोग के सम्बन्ध में डा0 पुष्पा जौहरी का कथन है कि सन्त काव्य के शास्त्रीय सांचे में ढले, नपे–तुले स्वरूप, संगीतिक मर्यादायों के निर्वाह और ऐसी बातों को खोज करना, जो कियात्मक संगीत में निष्णात किसी संगीतविद की कला में ही दृष्गित हो सकती है, न तो तर्क–संगत है और न न्याय संगत। प्राचीनकाल में रिकार्ड अथवा टेप रिकार्डों जैसे वैज्ञानिक उपकरणों तथा स्वरलिपि–प्रणाली के अभाव में सन्तों के गायन का कियात्मक स्वरूप प्रामाणिक रूप से जान सकना सम्भव नहीं है। सन्त–काव्य में जो भी थोड़े–बहुत संगीत–संबंधी प्रयोग या उल्लेख उपलब्ध है, उन्हें सन्तों को अलौकिक संगीत–प्रतिमा के प्रमाण–सूत्र के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए 3 ।' हमारे विचार से भक्त कवियों में संगीत–प्रयोग सुन्दर और आकर्षक रूप में हुआ है। उनके गायन–शैली में परम्परागत भक्ति–संगीत के साथ–साथ उनकी नीजि विशेषताएं भी मिलती हैं।

भक्त कबीर के काव्य में संगीत–प्रयोग सुन्दर और आकर्षक रूप में मिलता है। इस बात को स्वीकार करते हुए, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी लिखते हैं–

कबीर साहब के उपलब्ध पदो के संग्रहों में उनके विभिन्न रागों के अनुसार किए गए वर्गीकरण को पाकर इस प्रकार का प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या उनकी रचना संगीत–कला के किन्हीं स्वीकृत नियमों के अनुसार की गई होगी ? उनकी रचनाओं के अब तक, सब से प्रामाणिक समझे जाने वाले तीन संग्रहों में से 'आदिग्रन्थ' के अन्तर्गत उनके पद क्रमशः सिरी रागु, रागु गउड़ी, रागु आसा, रागु गूजरी, रागु सोरठि, रागु धनासरी, रागु तिलंग, रागु सूही, रागु विलावलु, रागु गोड़, रागु रामकली, रागु मारू, रागु केदारा, रागु मेरउ, रागु बसंतु, रागु सारंग तथा रागु परभाती के अनुसार विभाजित है। इसी प्रकार कबीर ग्रन्थावली ' में उनका वर्गीकरण क्रमशः राग गोड़ी, राग रामकली, राग आवावरी, राग सोरठि, राग कैदारी, राग मारू, राग टोड़ी राग भैरव, राग विलावल, राग ललित, राग बसंत, राग माली, राग गौ, राग कल्याण, राग सारंग, राग मलार तथा राग धनासरी के अनुसार किया गया मिलता है। उनके (पदों से अधिकांश में पूर्ण गेयत्व का साधन भी वर्तमान है, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि उनकी रचना के समय संगीत कला की और कवि का ध्यान अवश्य गया होगा4।

भक्त कबीर की वाणी में से अनेक उदाहरण मिलते है जिनसे पता चलता है कि कबीर जी संगीत प्रेमी भी थे। इस बारे में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का कथन अक्षरशः सत्य है। वे लिखते हैं 5 कबीर साहिब के संगृहीत पदों का केवल रागानुसार किया गया वर्गीकरण ही नहीं पाया जाता, अपितु उनकी रचनाओं में ऐसे अनेक प्रकार के प्रसंग तथा प्रयोग तक मिलते हैं, जिनसे उनके रचयिता का संगीत–प्रेम सूचित होता है। कबीर साहिब ने अपने पदों के सम्बन्ध में स्वयं एक स्थल पर गीत शब्द का प्रयोग किया है। वहां वे कहते हैं–' तुम यह न समझो कि मैं केवल गीत की रचना कर रहा हूँ, इसमें मेरे ब्रहम–सम्बन्धी नीजि विचार भी हैं।' यहाँ पर उन्हें इस बात का स्पष्ट बोध है कि मैं गीतकार हूँ। वे नाम–स्मरण को भी, दूसरों के प्रति उसका बोध कराते हुए गुणगान को संज्ञा देते हैं। उन्होंने आदर्श भक्त का परिचय देते हुए अपने एक पद को टेक में ही यह कह दिया है–' निरमल निरमल रामं गुणं गाने, सो भगता मेरे मनि भावे। ।।टेक।।' यहाँ पर ऐसा प्रतीत होता है कि उनका अभिप्राय भजन से ही रहा होगा और सच्चे हृदय से हरिनाम का गान करना उन्हें अवश्य प्रिय लगता होगा। भक्त कबीर अनहद नाद की बात करते उसे वेणु (बेनु) का नाम भी देते हैं। यथाः–

बार बार हरि के गुन गावउ।।
गुर गमि भेदु सु हरि का पावउ।। 1।। रहाउ।।
आदित करे भगति आरंभ।।
कइआ मंदर मनसा धर्म।।
अहिनिसि अखंड सुरही जाह।।
तउ अनहद बेणु सहज महि समाह।।6।।

यहां पर अनाहत नाद के श्रवण को वे वेणु के स्वर संगीत श्रवण–जैसा कह रहे है। उनका साधक सद्गुरू द्वारा संकेत पाकर सुरति को उस नाद की ओर उन्मुख किए रहता है। इस प्रकार जोग जुगति के सहारे अपने भीतर ही हरि को पा लेता है। एक अन्य स्थल पर, इसी अनहद नाद का कींगुरी अर्थात–जोगियों को छोटी सारंगी व चिकांरे के शब्द–जैसा वर्णन भी करते हैं। कबीर जी

कहते हैं कि वह अनहद किंगुरी इस प्रकार बजती है कि उसकी ओर उन्मुख हो जाते ही सुरति का नाद में लो लग जाना सम्भव हो जाता है। उनके शब्द हैं –

अचरज एकु सुनतु रे पंडीआ अब किछु किहन न पाइ।।
सुर नर गण गंध्रब जिनि मोहे त्रिभवण मेखली लाई।। 1
राजा राम अनहद किंगुरी बाजे।।
राजा को दिसटि नाद लिव लागे।। 7।। रहाउ ।।

ऊपरलिखित पंक्तियों से, भक्त कबीर की संगीत–कला विषयक भिज्ञता ही प्रकट होती है। इसी तरह, उन्होंने अपने अनेक शब्दों में वाद्य–यन्त्रों के बारे में भी कहा है। 'बीन, तूंबा, रबाब आदि का नाम ओर उनके रूप की बात की गई है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कबीर जी के काव्य में हमें केवल पदों का रागानुसार किया गया विभाजन ही नहीं मिलता । उसमें बहुत–से ऐसे उदाहरण भी पाए जाते है, जिनसे भक्त कबीर को संगीत के प्रति अभिरूचि ओर उनकी संगीत के बारे में जानकारी भी मिलती है।

तत्कालीन गहन ओर दीर्घकालीन संगीत भरे वातावरण में रहते हुए, कबीर जी का संगीत के विषय जानकारी प्राप्त कर लेनी, सम्भव है। इस आधार पर हमारा यह अनुमान करना भी उचित ही है कि उनके काव्य का निर्माण संगीत–कला की दृष्टि से भी हुआ होगा। इसी प्रकार भक्त नामदेव ओर भक्त रविदास के काव्य में भी कुछ उदाहरण मिल जाते हैं जिन से पता चलता है कि उन्हें भी थोड़ी–बहुत संगीत की जानकारी अवश्य रही होगी।

संदर्भ

1 तस्य गीतस्य माहात्म्यं कः प्रशंसितुमीशते। धर्मार्थकाममोक्षाणा भिदभेवेक साधनम्।। संगीत रत्नाकर, छन्द– 30, अध्याय––1
2 डा0 पुष्पा जौहरी, सन्त नामदेव का काव्य और उसमें संगीत तत्व (1985ई0), पृष्ठ 53।
3 सन्त नामदेव का काव्य और उसमें संगीत–तत्व (1985ई0), पृष्ठ 54।
4 आचार्य परशुराम चतुर्वेदी : कबीर साहित्य की परख (1986ई0), पृष्ठ 281
5 वही0, पृष्ठ
6 आदि गुरूग्रन्थ साहिब, रागु गउड़ी वार कबीर बीउ, पृष्ठ 344।
7 आदि गुरू ग्रन्थ साहिब, सिरी रागु कबीर जीउ, पृष्ठ 92।